Shodhak (शोधक) **(ISSN: 0302-9832)**
A Journal of Historical Research

रामचरित मानस में सामाजिक, धार्मिक मानवीय तथा शैक्षिक मूल्य एक अध्ययन

प्रवेश शर्मा
शोधार्थिनी

मोहित मिश्रा
शोध निर्देशक, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय

भक्तिकालीन साहित्य में तुलसीदास का रामचरित मानस प्रत्येक देश काल व वातावरण के लिये उपयोगी ग्रन्थ है। महान व कालजयी साहित्य वही होता है जो उसके अस्तित्व व अस्मिता को सुरक्षा कवच प्रदान करता है। साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्यकार समाज से सम्बन्धित तथ्य अपनी रचना में लिपिबद्ध करता है, क्योंकि वह भी सामाजिक प्राणी है। तुलसी दास ने सामाजिक, धार्मिक, मानवीय व शैक्षिक मूल्यों को अपने ग्रन्थ रामचरित मानस में समाहित कर लोकमंगल की कामना की है। मेरा विचार है कि ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता प्रत्येक काल में है। निःसन्देह मध्ययुगीन भक्तिकाल की सन्त काव्यधारा साहित्य के मूल्यपरक दृष्टिकोण को पूर्णतः आत्मसात करती है। साथ ही साथ साहित्य जगत के मार्ग से लोक कल्याण भावना का बखूबी निर्वहन करती है। साहित्य और सामाजिक मूल्य का सम्बन्ध शाश्वत है ।

आरम्भ काल से ही मानव सुविधा पूर्वक जीवन जीना चाहता है! सुविधापूर्वक जीवन यापन हेतु उसे सत्यं शिवम् सुन्दरम् को मानना पडता है। इसी के आधार पर मानव मात्र के प्रति दया, ज्ञान-विज्ञान से युक्त दृष्टि आचार-निर्माता चरित्र का समवेत रूप क्षमा, मृदुता तथा सरलता का भाव अपना लेता है। सत्यं शिवम् सुन्दरम् युक्त इस ग्रन्थ की वर्तमान परिपेक्ष्य में महती आवश्यकता है। मानस ऐसा ग्रन्थ है, जो सम्पूर्ण व्यावहारिक जीवन दर्शन को समेटे हुये है। इसमें सांसारिक जीवों के व्याक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन के विमिन्न अंगो के लिये आदर्श प्रस्तुत किया है। भारतीय मनीषियों के अनुसार सभी मूल्यों को धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चार कसौटियों में विभाजित किया गया है। धर्म और शिक्षा का सम्बन्ध ऐतिहासिक है। आदि काल से ही धर्म ने शिक्षा को प्रभवित किया है धर्म मूल्य का निर्धारण करता है, शिक्षा उस पर अमल करती है धर्म शिक्षा की पहली सीढ़ी है तो शिक्षा दूसरी सीढ़ी। धार्मिक विचारों में परिर्वतन होने से शिक्षा के रूप में भी परिर्वतन होने लगता है। एक अध्यापक भी धर्म से युक्त होता है, और होना भी चाहिए क्योंकि धर्म से विमुख व्यक्ति कट्टर स्वभाव का होता है और ऐसे अध्यापन द्वारा अध्यापक कार्य तो सम्भव हो सकता है किन्तु बालक रूचि लें यह असम्भव है। आध्यात्मिक व्यक्ति मृदु स्वभाव का होता है, साथ ही सहनशील, धैर्यशील, विवेकी, संयमी, वस्तु निष्ठ दृष्टिकोण वाला तथा शीलवान होता है ऐसे शिक्षक का सम्पूर्ण व्यवहार आचरण लचीला और प्रेम युक्त होता है। बालकों को उनके लक्ष्य की ओर उन्मुख करता है। रामचरित मानस धार्मिक ग्रन्थ होने के साथ साथ लोकहित कारी है। समन्वयकारी ग्रन्थ होने के कारण मानस की प्रासांगिकता आज भी बनी हुई है।

'**रामचरित मानस में सामाजिक, धार्मिक, मानवीय तथा शैक्षिक मूल्य :- एक समीक्षात्तक अध्ययन**' के सन्दर्भ में हम कुछ बिन्दुओं पर दृष्टि डालेंगे।

सामाजिक समरसता :-रामचरित मानस में सामाजिक समरसता विद्यमान है। मानस में ऊँच- नीच के भेदभाव को

मिटाने का भरसक प्रयास किया गया है प्रेमवश शबरी के झूठे बेरों का खाना उसका प्रमाण है। इस सन्दर्भ में हम निषादराज का उदाहरण ले सकते है। जब भरत राम को अयोध्या लौटाने के लिये चित्रकूट जाते है तब उनकी भेंट निषादराज से होती है तब भरत के द्वारा उनका नाम पूछा जाने पर वे कहते है:-

देखि दूरी ते कहि निज नामू
(अर्थात् मैं नीची जाती का हूँ)

यह सुनकर भी भरत रथ से उतरकर बडे प्रेम से उसकी ओर जाते हैं यह प्रतिक्रिया समरसता का प्रमाण देती है।

"राम सखा सुनि स्यंदन त्यागा
चले उतरि उमनत अनुरागा।
करत निषाद दंडवत पाई प्रेमहि
भरत लीन्ह उर लाई
भेंटत भरत ताहि आति प्रीती
लोग सिहाहि प्रेम कइ रीती "

मानस के कुछ प्रसंगो से इस बात की पुष्टि होती है। वास्तविता के आधार पर यदि विचार किया जाये तो यह तथ्य सत्य है कि प्रेम जाति पाँति ऊँच-नीच आदि को भुला देता है। आज के वातावरण को यदि ध्यान से देखें तो कितना दुखः होता है लोग मजदूरी करने वाले, सफाई करने वाले, सब्जी बेचने वाले, गैस सिलेण्डर बाँटने वाले को हीन भावना से देखते हैं। इसी कारण हमें अपने अर्न्तमन को झकझोरने की आवश्यकता है इस विषय में समाज सुधारकों ने निरन्तर चिन्तन किया है।

श्री रामचन्द्रजी को सरयू पार कर चित्रकूट पहुँचना था तो केवट को साथ लिये बिना वे कैसे वहाँ पहुँचते । उनके लिये लंका पहुँचना कोई कठिन कार्य नहीं था। परन्तु लंका जाने के लिये सेतु बाँधने के लिये अपने चौदह वर्ष के वनवास के समय उन्होने वानरों को साथी भी बनाया तथा शबरी को माता कौशल्या से कम न समझा। सामाजिक विभिन्नता होने पर भी उस समय अच्छे कार्य हुये हैं और उस विविधता में एकता स्थापित की है। वानर समाज का सहयोग इस बात का प्रमाण है। जनजाति समाज हो अथवा कोई दूसरा सब मे समरसता प्रतीत होती है। हमारे देश में इस विविधता को दूर करना बड़ा ही दुष्कर कार्य है। हमारे देश में जो विद्यटन के तत्व जोर पकड़ रहे है वह सामाजिक विभिन्नता के कारण ही गम्भीर रूप धारण करते जा रहे हैं। समाज एक संकीर्ण दृष्टिकोण से भरा हुआ है, वह केवल लाभ की ओर देख रहा है। उसको यह चिन्ता नहीं कि उसकी धरणाओं से देश को लाभ होगा या हानि । प्रत्येक सामाजिक समूह बन्द सन्दूक की भाँति अपने को दूसरे के सामाजिक समूह से अलग रखने का प्रयत्न करता है दूसरों के द्वष्टिकोण को समझने की चेष्टा नहीं करता। इस समय आवश्यकता इस बात की है कि विभिन्न समाजों में एक दूसरे से मिलने जुलने की भावना उत्पन्न की जाये और उन्हें समाज के प्रति प्रेम के साथ-साथ इस बात की ओर कार्य करने को कहा जाये कि राष्ट्र का कल्याण हो। रामचरित मानस एक कारगार ग्रन्थ है जिससे सामाजिक समरसता की शिक्षा प्रात्त की जा सकती है।

<u>राजनीतिक एकता</u> - रामचरित मानस राजनीतिक एकता के लिये भी विख्यात है। राजगद्दी के लिये कोई भाई व्याकुल नहीं है। राम पिता की आज्ञा के पालन हेतु राजसिंहासन का परित्याग कर वन को चले जाते हैं। कैकेयी के चाहने पर भी भरत राजा का पद ग्रहण नहीं करते बल्कि राम को लौटाने अयोध्या से वन को निकल पड़ते हैं। पीछे-पीछे सभी सम्बन्धी व सामाजिक सदस्य चल पड़ते हैं। उसमें कोई सन्देह नहीं कि भारत भर में पूज्य स्थान फैले हुये हैं जहाँ जाकर कहीं का भी व्यक्ति तृप्ति प्राप्त करता है उत्तर से उत्तरी सीमा तक रहने वाला भारत का निवासी भारत

के दक्षिण के अन्तिम छोर रामेश्वरम को श्रद्वा की द्वष्टि से देखता है और इसे अपना अहोभाग्य समझता है यदि उसको वहाँ जाने का अवसर मिले। अयोध्या राम जन्म भूमि है एक पवित्र स्थली है तथा पुण्य भूमि मानी जाती है राजनीतिक दृष्टिकोण से देखें तो आज भी एकता के दर्शन होते है । इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि भारतवासी राज्य के बन्धनों में न बँधकर सारे भारत में आते-जाते रहे हैं। एक दूसरे के प्रति श्रद्वा रखते रहें है और आन्तरिक एकता के सूत्र में रहें हैं।

राष्ट्रीय एकता -साहित्यकार समाज का पारखी होता है अतः साहित्य समाज का दर्पण है इसीलिए साहित्यकार समाज की दिशा व दशा पर द्वष्टि रखता है अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के उत्थान में अपनी भूमिका निभाता है। गोस्वामी तुलसीदास ने मानस के माध्यम से तत्कालीन समाज को इस सामुदायिक विभाजन से होने वाली हानि से उभारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बालकाण्ड में वर्णित मुनि समागम में ऋषि भारद्वाज कहते है कि हर कोई भगवान शंकर राम की महिमा का बखान करते हैं :-

"संतत जपत संभु अविनाशी।
शिव भगवान ज्ञान गुनरासी।।
सोऽपि राम महिमा मुनिराया।
शिव उपदेश कीन्ह करि दाया।।"

सीता हरण के पश्चात् जब राम दुखित हो सीता की खोज में निकलते हैं तब वन में रहने वाले खग, मृग तथा अनार्य जातियाँ सीता की खोज में मददगार होती है यह एकता की सर्वश्रेष्ठ मिशाल है राम के वन जाने से रावण वध तक इन वनवासियों की भूमिका अपरिहार्य है। शिक्षा आयोग १९६४-६६ ने शिक्षा को राष्ट्रीय सुरक्षा का आधार माना है, इनका कहना है कि कोई भी राष्ट्र अपनी सुरक्षा को केवल पुलिस तथा सेना के हाथों में नहीं छोड़ सकता। एक बड़ी सीमा तक राष्ट्रीय सुरक्षा राष्ट्र के नागरिकों की शिक्षा पर उनके घटनाओं के ज्ञान पर उनके चरित्र तथा अनुशासन की भावना पर तथा उनकी इस योग्यता पर कि वह प्रभावशाली ढंग से सुरक्षा कार्यों में भाग ले सकें पर निर्भर करती है। जब सुरक्षा किसी भी समाज को मिलती है तब अनेकता का प्रश्न ही पैदा नही होता। हम राष्ट्रीय एकता प्राप्त करने के लिये प्रत्येक व्यक्ति समाज पार्टी राज्य व जाति का सहयोग अपरिहार्य समझते हैं। इस समय राष्ट्रीय एकता का प्रश्न गम्भीर रूप से हमारे सामने है राष्ट्रीय एकता को प्राप्त करने में जो बाधाएं हैं वे इस प्रकार हैं- विभिन्न धर्मों का होना, ऐतिहासिक रूप से देश में अनेक राज्यों का होना, विभिन्न जातियों का पाया जाना, विभिन्न राजनैतिक पार्टियों, विभिन्न राज्यों के निवासियों में संघर्ष, अच्छे नेतृत्व की कमी, सांस्कृतिक विभिन्नता का होना, देश में विभिन्न भाषाओं का बोला जाना, सेवा आयोग में निष्पक्षता का अभाव, अनुपयुक्त शिक्षा का होना, आर्थिक विभिन्नताओं का पाया जाना तथा सामाजिक विभिन्नता का होना।

रामचरित मानस में यदि संघर्ष हुआ भी है, तो सत्य की विजय के लिए। परिवार में मनमुटाव हुआ है तो सिर्फ न्याय के लिये। राम घर से निकले तो सिर्फ पिता की आज्ञा का पालन करने के लिये। मानस में सर्वत्र अन्ततः न्याय के दर्शन होते हैं जो एकता के प्रतीक हैं। मानस के राम आज्ञाकारी पुत्र, पत्नीव्रता, स्नेहिता अग्रज, गुरूपालक शिष्य के साथ-साथ एक न्यायप्रिय एवं सर्वगुण सम्पन्न राजा हैं। वे प्रजा को पुत्रवत स्नेह करते हैं उनकी दृष्टि में परिवार और प्रजा में समभाव है इसीलिये श्री राम के लिये राजधर्म श्रेष्ठ बन जाता है और परिवार उपेक्षित। राजधर्म निभाने के लिये कहीं-कहीं मर्यादा पालन हेतु श्री राम को यह कदम उठाना भी पड़ा। उन्होंने एक धोबी के कहने मात्र से ही सीता निष्कासन किया जबकि सीता की पवित्रता को वे भली भाँति जानते थे। किन्तु शासन सुचारू रूप से चले और राष्ट्रीय एकता अनेकता में परिणित न हो इस उद्देश्य से उनका यह कर्त्तव्य बन पड़ा।

धार्मिक चेतना- धर्म का शाब्दिक अर्थ होता है "धारण करने योग्य" सबसे उचित धारणा अर्थात् जिसको सभी को धारण करना चाहिए धर्म एक परम्परा के मानने वालों का समूह है ऐसा माना जाता है कि धर्म मानव को "मानव" बनाता है।

जिस नैतिक नियम को आजकल गोल्डेन रूल या एथिक ऑफ रेसिप्रोसिटी कहते हैं। उसे भारत मे प्राचीन काल से मान्यता है। धर्म का सिद्धान्त है कि जो आचरण स्वयं के प्रतिकूल है, वह दूसरों के प्रति नहीं करना चाहिए।

राम नाम का प्रभाव तो सभी युगों सभी शास्त्रों में मिलता है। तुलसीदास के अनुसार राम नाम वह साधन है जिससे सभी सिद्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। केवल इतना ही नहीं जब तक जीव अपनी जिव्ह से राम नाम नहीं जपता तब तक वह दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से जलता रहेगा। इसी कारण राम नाम का भरोसा छोड़ जो कोई और भरोसा करता है। वह ऐसा ही है जो परोसे भोजन को छोड़कर घर-घर फिरता हो। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने इस बात पर ध्यान दिया था कि "शताब्दियों पर शताब्दियाँ बीत गई, लेकिन रामायण, महाभारत का स्त्रोत तनिक भी नहीं सूखा है। प्रतिदिन गाँव-गाँव घर-घर पंसारी की दुकान से लेकर राजा के महल तक राम नाम पर एक सी श्रद्धा है, क्योंकि यह श्रद्धा की ही नहीं व्यवहार बुद्धि की बात भी है।" महाकवि निराला ने लिखा है-

"राम के हुये तो बने काम
संवरे सारे धन, धान -धाम।"

वर्तमान बुद्धिजीवियों के इस सन्देह को सम्बोधित करते हुये ही निराला वही जोड़ते हैं-

पूछा जग ने, वह राम कौन?
बोली विशुद्धि जो रही मौन।
वह जिसके दून न डयोढ़ पौन,
जो वेदों में है सत्य साम।।

आज का मनुष्य सम्पूर्ण मान भूलकर केवल वस्तुयें बटोरने में लगा हुआ है, और भोग विलास को ही शिक्षा व जीवन का लक्ष्य मान बैठा है। तभी वह राम नाम की महिमा को 'फेथ' की श्रेणी में डाल कर इधर उधर भटक रहा है, जबकि राम हृदय में स्थित है। भारतीय संविधान की धारा- १६ में यह बात स्पष्ट कर दी गयी है कि "सभी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार किसी धर्म का अनुसरण कर सकते हैं। यहाँ के नागरिकों को इस बात की स्वतन्त्रता प्रदान की गयी है कि वे किसी भी धर्म को मानने तथा उसके आचरण करने के लिये स्वतन्त्र हैं।"

भारतीय दर्शन में धर्म के दस लक्ष्ण बताये गये हैं -

घृतिःक्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रयनिग्रहः।
धी विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

(धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, पवित्रता, इन्द्रिय निग्रह, ज्ञान, विवेक, सत्य और अक्रोध - यह दस धर्म के लक्षण हैं।) हमें चाहिये कि धैर्य रखें, क्षमा, आत्म दान, चोरी न करना, शरीर और मन को पवित्र रखना सीखें। इन्द्रियों को वश में रखें, विवेकशील रहें, विद्या ग्रहण करें, सत्य व्यवहार करें और कभी क्रोध न करें।

प्रश्न यह उठता है कि धार्मिक विद्या किसी सरकारी विद्यालय में नहीं दी जा सकती ऐसी स्थिति में मौन प्रार्थना करायी जाये, जिसमें बालक अपने धर्मानुसार अपने इष्टदेव की ओर कुछ देर ध्यान दे सकते हैं और कुछ काल के लिये सांसारिक संकटों व झंझटों से ऊपर उठने का प्रयास कर सकते हैं। चरित्र में परिवर्तन लाने के लिये महापुरूषों की जीवनियाँ आवश्यक है इनसे प्रभावित होकर बालक वैसा बनने का प्रयास करते हैं। रामचरित मानस की शिक्षा में धर्म के साथ बहुत कुछ समाहित है इस प्रकार की शिक्षा व्यवहार पर अवलंबित होगी। धार्मिक शिक्षा में

व्यापक अर्थ को स्थान मिलना चाहिए न कि संकीर्ण। बालकों को सर्वधर्म समभाव के लिये प्रेरित करना चाहिए। अतएव हम कह सकते हैं- "धर्म मानव जीवन के आध्यात्मिक मूल्यों और मानव व्यक्तित्व का परमात्मा से सम्बन्ध की ओर संकेत करता है।" किलपैट्रिक महोदय के अनुसार- "धर्म एक सांस्कृतिक प्रतिकृति है, जो अलौकिक एवं असाधारण से उस प्रकार का सम्बन्ध रखता है जैसे कि उन विशिष्ट व्यक्तियों के लिये रखे जाते हैं जो कि उनमें आलिप्त हैं।

यदि धर्म को शिक्षा से अलग कर दिया जायेगा तो मानव के अन्दर से भय स्वतः ही हट जायेगा। ऐसी स्थिति में मानव को दानव बनने में तनिक भी देरी नहीं लगेगी तब देश में भ्रष्टाचार चोरी, मार-काट, असत्य भाषण तथा कट्टरता सर्वत्र व्याप्त हो जायेगी। अतः ऐसी स्थिति से बचने के लिये धर्म व संसार को कल्याण मार्ग पर प्रशस्त करने वाले ग्रन्थ की महती आवश्यकता है।

मानवीय तथा शैक्षिक मूल्य- जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से सम्बन्धित होता है। कोई भी शिशु बचपन से ही मूल्य शिक्षा ग्रहण करता है मूल्य का आशय गुणशीलता से है इसे उचित, उत्तम के सन्दर्भ में भी समझा जा सकता है दरिद्र की सहायता करना उत्तम कार्य है किन्तु कपड़े की खरीद के सम्बन्ध मे निर्णय लेना उचित की श्रेणी में आता है।

रामचरित मानस में मूल्य शिक्षा सर्वत्र जान पड़ती है। मैं ऐसा मानती हूँ क्योंकि सत्य, अंहिसा अस्तेय, अपरिग्रह, आदर, शिष्टाचार, सद्भावना इत्यादि सभी मूल्य इसमें मिलते हैं। मानवीय व शैक्षिक मूल्य के क्षेत्र इस प्रकार दृष्टिगोचर होते हैं-

(अ) **आर्थिक मूल्य**- मानस में जिन आर्थिक मूल्यों का वर्णन मिलता है उनका आशय उसे साधक या उपकरणीय मूल्य कहा जा सकता है क्योंकि उस धन को मूल्यवान न मानकर प्रसन्नता की वस्तु माना जाता था। मूल्यों की शिक्षा में सदुपयोग की शिक्षा सम्मिलित होती थी। धन को आराम का साधन नहीं बनाया जाता था। आधुनिक जीवन की जटिलता के कारण हमारा जीवन सरल नहीं रह गया है। जिससे हमें तनाव होता है आज प्रत्येक व्यक्ति के पास टीवी, मोटर, कार, ए.सी, आदि होने चाहिए। आमदनी कम होने पर व्यक्ति रिश्वत आदि शुरू करता है। ऐसा न करना पड़े इसके लिये आय के अनुसार व्यय करना चाहिए।

(ब) **स्वास्थ सम्बन्धी मूल्य**- रामचरित मानस में स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्यों पर विशेष ध्यान दिया गया है। कई चौपाइयों में भी वर्णन आता है राम से सम्बन्धित प्रातः उठना, माता पिता के चरणों में प्रणाम करना, स्नान, खेलकूद, व्यायाम, खान-पान का ध्यान इत्यादि स्वास्थ सम्बन्धी मूल्य है कहा भी गया है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मष्तिष्क का निवास होता है।

(स) नैतिक मूल्य - नैतिक मूल्यों की शिक्षा विद्यार्थी के अन्दर विकल्पों के चुनाव की क्षमता में वृद्धि एवं उनमें सन्तोष प्राप्त करने की आदत बनाने की ओर दी जानी चाहिए। नैतिकता के अभाव में व्यक्ति पशु तुल्य हो जाता है। अति प्राचीन समय में गुरू शिष्य को नैतिकता की शिक्षा प्रदान करते थे राम राज्य में आचार्य की यही कामना रहती थी कि शिष्य सच्चरित्र, संयमी, मनीषी तथा यशस्वी होवे। विनीत, ब्रह्मचर्य परायण, सत्यपरायण, सद्भावनाओं से युक्त शिष्य, गुरूजनों के प्रति श्रद्धातु रहते थे। शिक्षा गृहण करने के पश्चात् वे उपयोगी नागरिक सिद्ध हुआ करते थे। भ्रष्टाचार, ईर्ष्या मनमुटाव व अनैतिकता उनके मन को छू भी न सकती थी। वर्तमान में भी उसी शिक्षा की महती आवश्यकता है।

सौन्दर्यानुभूति मूल्य- तुलसीदास का सौन्दर्यबोध, वैयक्तिक पारिवारिक प्रेमपरक, ग्रामीण-लोक सांस्कृतिक और मानवीय गुणों को छूते हुये भक्तिपरक, नीतिपरक तथा आध्यात्मिक शिखर पर पहुँचता है। तुलसीदास ने अपने मानस मे

मानवीय धरातल पर स्वछन्द रचना करते हुये अपूर्व सौन्दर्यबोध का परिचय दिया है। आज के वातावरण में विषम परिस्थितियों से दूर होने के लिये मानस अनुपम ग्रन्थ है।

मूल्य निर्धारित शिक्षाः- जीवन पर्यन्त चलने वाली शिक्षा में इस प्रकार की शिक्षा में सम्पूर्ण समाज का योगदान होता है, तथा शैक्षिक मूल्यों में परीक्षण परिणाम तथा जीवन परिणाम दोनों का समन्वय होता है। रामचरित मानस आज के युवाओं के लिये उपादेय ग्रन्थ है, क्योंकि राम को एक सांसारिक व्यक्ति की भाँति दर्शाते हुये कर्त्तव्य पालन करते हुये दर्शाया है। लक्ष्मण को भातृ प्रेम से पूर्ण, राजा-सेवक सम्बन्ध तथा कर्त्तव्य पालन करते हुये दर्शाया है। यही वह ग्रन्थ है जिसमें भक्ति ज्ञान व वैराग्य कि शिक्षा भी निहित है।

निष्कर्ष - इस प्रकार हम देखते हैं कि तुलसीदासकृत रामचरित मानस ने भारतीय संस्कृति को न केवल भारत भूमि में ही ंबल्कि सम्पूर्ण विश्व में फैलाया है इस ग्रन्थ की चौपाइयों को विदेशी भी बड़े चाव से सुनते व पढ़ते हैं। राम की त्यागशीलता, क्षमा, दया, पुत्रधर्म व युगधर्म आदि से हमें भी इन्हें अपनाने की शिक्षा मिलती है। यदि आज के युवाओं को इससे सम्बन्धित शिक्षा प्रदान की जाये तो वह दिन दूर नहीं जब रामराज्य जैसी स्थिति आ जायेगी। अगर वैसी थोड़ी भी स्थिति आ जाती है तो इस पृथ्वी पर कोई दीन-हीन व दुखी दिखाई नहीं देगा। कलह-कलेशों का सर्वथा अन्त हो जायेगा। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि रामचरित मानस सर्वोत्कृत्ट ग्रन्थ है। इसमें सामाजिक धार्मिक शैक्षिक तथा मानवीय मूल्य समाहित है जो आज के समय में अत्यन्त उपयोगी व आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

१. श्री रामचरित मानस, गोस्वामी तुलसीदास टीकाकार हनुमानदास पोद्दार गीता प्रसाद, गीता प्रेस गोरखपुर।
२. आधुनिकता और तुलसीदास, श्री भगवान सिंह भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
३. श्रीमती अनीता सिंह , (२०११) स्वामी विवेकानन्द श्री अरविन्द रवीन्द्र नाथ टैगोर और गाँधी के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान युग में उनके शैक्षिक विचारों की उपादेयता शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
४. गोस्वामी चिमनलाल (१९७२) "रामांक" कल्याण श्रीमद्भगवद्गीता, गीताप्रेस गोरखपुर।
५. डॉ. एस. एस. माथुर (२०१३) श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२
६. प्रेम नारायण पाण्डे, एजूकेशन एण्ड सोशल मोबिलिटी, १९८८।